REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 7 | ISSUE - 9 | JUNE - 2018

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' के साहित्य में युग चेतना ।

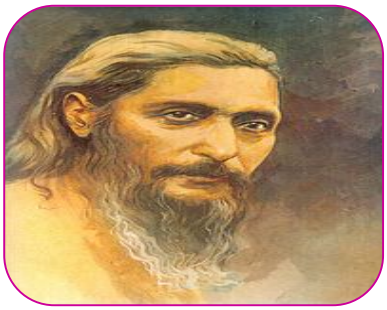

बदरुन निसा मुहम्मद फारुक खाँन [1], डॉ. प्रभात कुमार दुबे [2]
[1]पी.एच.डी.शोध अध्ययन छात्रा

प्रस्तावना

जीवन परिचय :

जन्म : सुर्यकांत त्रिपाठी निराला जी का जन्म माघ शुक्ल एकादशी संवत 1955 वि तदनुसार 21 फरवरी 1899 ई. को बंगाल की सुरम्य शस्य श्यामला भूमि में हुआ[1]

उनके पिता का नाम पंडित राम सहाय और माता जी का नाम रुक्मिणी देवी था ।
निराला जी का साहित्य सामजिक चेतना की दृष्टि से अत्यधिक महत्व रखता है ।
निराला एक श्रेष्ठ साहित्यकार थे । निराला के कथा-
साहित्य में उनके जीवन की अनुभूतियाँबड़े ही सुंदर रुप में चित्रित हुईहै ।

समाज का विविध रुप उनकी दृष्टि के सामने आया और समाज के तिक्त मधुर रूपों को देखा किंतु उनके जीवन में तिक्त अनुभातियाँ ही सबल रही । उन्होंने अपने युग के समाज में प्रतिदिन जमींदारों के अत्याचार से पिड़ित शोषित जनों का क्रन्दन सुना था , उनके जीवन के कुत्सित व्यवहार देखने को मिले थे ।

कृषकों की दयनीय स्थिति, उनकी जटिल समस्याएँ निराला के अंतर्मन को विक्षुब्ध करती रही इन समस्याओं को कथाकार निराला ने अपने साहित्य में प्रस्तुत किया है ।

1. सामाजिक चेतना की व्याख्या :

सामान्य रुप में "समाज" शब्द एक संगठित समूह या समुदाय का द्योतक है । मानव सामाजिक प्राणी है वह समुदाय में रहता है । उसका जीवन समाज पर ही निर्भर है । जन्म से ही उसे अपनी सुरक्षा, पालन, पोषण, शिक्षा-दीक्षा तथा अन्य सभी आवश्यकता की पूर्ति के लिए समाज का ही सहारा लेना पड़ता है । समाज ही, मानव की आशा आकांक्षा, सभ्यता और संस्कृति का आधार है । इसलिए स्वाभाविक रुप से वह समाज का संगठन करता है । व्यक्ति समाज का निर्माण करता है । और समाज व्यक्ति का । दोनों का अस्तित्व एक दूसरे पर अवलम्बित है । मानव जीवन, बिना व्यक्ति के नहीं कि जा सकती । इस प्रकार व्यक्ति और समाज एक दूसरे के पूरक है- दोनों में अटूट संबंध है । परंतु " समाज शास्त्र में समाज का अर्थ व्यक्तियों का समूह नहीं, अपितु सामाजिक संबंधो की एक अमूर्त व्यवस्था को ही हम समाज शास्त्र दृष्टिकोण से समाज कहते है ।"[2]

पारस्पारिक जागरुकता, सहयोग, संघर्ष, समानता, भिन्नता आदि का समावेश समाज के स्वरुप में होता है । इससे अंतर्गत मानव के वैयतिक और सामूहिक दोनों प्रकार के व्यवहार समाहित है । वस्तुत: समाजशास्त्र के अंतर्गत " समाज का महत्त्वपूर्ण तत्व संबंधो की व्यवस्था, अंतक्रिया के मानको का प्रतिमान है जिसके द्वारा समाज के सदस्य अपना निर्वाह कहते है ।"[3]

2. सामाजिक चेतना;

" सामाजिक चेतना संयुक्त सामाजिक शब्द है । समस्त पद के रुप में सामाजिक चेतना में समाज और चेतना दोनों का सम्मिलित अर्थ समाविष्ट होता है । सामाजिक चेतना समाज की अबाधित, अववर और विकासशील प्रवृत्ति है । यही मानव-समाज को पशु से विभक्त करती है । सामाजिक चेतना का प्रयोग व्यापक अर्थो में भी होता है, न केवल यह समूह के सामाजिक नियंत्रण से सम्बंधित है, अपितु समुह के सदस्यों के पारस्परिक व्यवहार पर भी प्रकाश डालती है ।"[4]

चेतना सामाजिक वातावरण के सम्पर्क से विकसित होती है ।
साहित्य सामाजिक चेतना की अभीव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है ।
अत: साहित्य का इतिहास मानव - समाज के वाहय एवं

मनुष्य की सामाजिक चेतना जब अपने समय के उतार - चढ़ाव और उथल - पुथल से जुड़ी हुई होती है तो उसको युग चेतना कहते है । युग चेतना कहते है । युग चेतना अर्थात अपने समय से जुड़ी हुई चेतना युग की गति, प्रवृत्ति, भावना विचारधारा से जुड़ी जो चेतना हो, वही युग - चेतना कहलाती है । युग - चेतना युग के शुभाशुभ सत्यासत्य तथा तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, दार्शनिक एवं वैज्ञानिक प्रवृत्तियों को पहचानने की शक्ति है । युग- प्रतिनिधि कलाकार के साहित्य में सामाजिक चेतना आवश्यक नहीं, अनिवार्य होती है, क्योंकि इसके बिना वह न मनुष्य की वास्तविक समस्याओं को पहचान सकता है, न यथार्थ समस्याओं से समाज को अवगत करा सकता है , और न उचित दिशा प्रदान कर सकता है । साहित्यकार यह कर देता है तो समझ लेना चाहिए कि उसने अपने सामाजिक उत्तरदायिक का पूर्ण निर्वाह कर दिया । साहित्य जो समष्टिगत चेतना की उपज होता है, उसमें युग - चेतना संश्लिष्ट है ।

साहित्यकार अपनी युगीन परिस्थितियों को देखता है एवं युगीन समस्याओं से परिचित होता है और समस्याओं के समाधान के रुप में नये निष्कर्ष निकालता है । निराला एक श्रेष्ठ साहित्यकार थे । निराला के कथा- साहित्य में उनके जीवन की अनुभूतियाँ बड़े ही सुंदर रुप में चित्रित हुई है ।

समाज का विविध रुप उनकी दृष्टि के सामने आया और समाज के तिक्त मधुर रूपों को देखा किंतु उनके जीवन में तिक्त अनुभातियाँ ही सबल रही । उन्होंने अपने युग के समाज में प्रतिदिन जमींदारों के अत्याचार से पिड़ित शोषित जनों का क्रन्दन सुना था , उनके जीवन के कुत्सित व्यवहार देखने को मिले थे ।

कृषकों की दयनीय स्थिति, उनकी जटिल समस्याएँ निराला के अंतर्मन को विक्षुब्ध करती रही इन समस्याओं को कथाकार निराला ने अपने साहित्य में प्रस्तुत किया है ।

3. सामाजिक चेतना का विश्लेषण :

निराला का सामाजिक चेतना सुधारवादी दृष्टि कोण था । समाज के आर्थिक विषमता से ऊँच - नीच के भेद - भाव को लेकर अनेकों समस्याएँ तत्कालीन समाज में उत्पन्न हो गई थी, उन सभी द्वन्द्वों का विस्तृत विश्लेषण उनके साहित्य में उपलब्ध है ।

उनके साहित्य का मूल बिंदु निम्न वर्गीय परिवारों का बहिमुर्खी संघर्ष, जमींदारों के अत्याचार, गरीबों की भुखमरी और आर्थिक विषमताओं से पीड़ित और तृषित भारतीय समाज है । सामाजिक बुराईयों को निराला जी ने अपने साहित्य में बड़ी सफलता से दिखाया और उसे सुलझाने का प्रयास किया है ।

उन्होंने शोषित वर्ग को जगाकर उसे अपने अधिकारों के प्रति सजग करते हैं और सामन्तवादियों के विरुध्द लड़ने के लिए जनता में साहस और चेतना का संचार करते है । इस संदर्भ में उनका ' अप्सरा', 'अलका' ,' निरुपमा' , काले कारनामे ' आदि उपन्यास ; श्याम, परिवर्तन, चतुरी चमार, आदि कहानियाँ उल्लेखनीय है

4. समन्वय भावना :

निराला जी जीवन पर्यन्त वर्ण - व्यवस्था, जातिगत भेदभाव, छुआ - छुत आदि के सदैव विरोधी रहे । उन्होंने अपने साहित्य के अंतगर्त धार्मिक अंधविश्वास, जातिगत असमानता, वर्ण - व्यवास्था, रूढ़ियाँ आदि का जमकर विरोध किया है । उन्होंने अपने उपन्यास, कहानियाँ, में विस्तार से विवेचन किया है ।

निराला जी जातिवाद तथा वर्ग - भेद दोनों को मिटाने के पक्ष में रहे । वे एक ऐसे समाज का निर्माण चाहते थे, जिसमें जाति और वर्ग का नामोशेष न हो । जाति और वर्ण व्यवस्था के परिणाम स्वरुप धर्म में पनपे पाखण्ड, अंधविश्वास, ऊँच-नींच भेदभाव आदि को वे समाज के विकास में बाधक के स्वरुप मानते है ।

5. प्रगतिशीलता :

हिंदी साहित्य में जब प्रगतिशील साहित्य की चर्चा होती है, तो उस साहित्य का ध्यान आता है, जिसमें मानव हित का संरक्षण और लोक मंगल की भावना होती है । जनहित के विकास में सहायक साहित्य ही प्रगतिशील साहित्य है । निराला जी के उपन्यास बिल्लेसुर बकरिहा, चोटी की पकड़, काले कारनामें, प्रगतिशील स्वर लिए हु ए दिखते हैं । निराला सामंत विरोधी प्रखर जन -वादी चेतना के लेखक थे । उन्हें जल्द ही यथार्थ का परिपक्क बोध हो जाता है । देवी , हिरनी, अर्थ, चतुरी चमार, आदि निराला जी की कहानियाँ हिंदी कहानी साहित्य में बेमिसाल है । तथा निराला के विधवा, तोड़ती पत्थर,कुकरमुत्ता, आदि कविताओं में भी प्रगतिवादी प्रवृ त्तियाँदिखाई देती है ।

" निराला जी व्यक्ति और समाज ,दोनों की समान चेतना के पक्षपाती हैं,वे किसी एक अंग की उपेक्षा दूसरे की परिपुष्टि एवं स्वस्थ बनाने की भूल नहीं करते ।" [5]

संदर्भ ग्रंथ:

निराला की साहित्य साधना – डॉ. रामविलास शर्मा राजकमल – प्रकाशन नयी दिल्ली – पृ.17

रवीन्द्रनाथ मुखर्जी " समाज शास्त्र" विवेक प्रकाशन, दिल्ली प्रथम संस्करण 1982

डॉ.विद्या भूषण "समाज शास्त्र के सिध्दांत" किताब महल इलाहाबाद 1984

the term social consciousness lends it self also to a wider use, not only does it cover those cases where the group acts a whole but also where the members of the group deal with eactho ther....Encyclopaedia of social sciences voi.3.1. p. 219-20

निराला :गीत गुंज पृ.63